26

परमेश्वर की ताड़ना को खुशी से मान लेना

2 शमूएल 15-20

इब्रानियों 12 अध्याय एक ऐसे विषय पर बात करता है, जो हमें बेचैन कर देता है, वह विषय है परमेश्वर की ताड़ना।

जिन लोगों के नाम इब्रानियों की पत्री भेजी गई थी वे निराश थे और छोड़ कर जाने वाले थे। लेखक उन्हें कुछ ऐसी बातें याद दिला रहा था, जिन्हें वे भूल चुके थे:

> ... जो तुम को पुत्रों की नाईं दिया जाता है, भूल गए हो,
>
> कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हल्की बात न जान,
> और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़।
> *ज़्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है;*
> और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।
>
> ... परमेश्वर तुज़्हें पुत्र जानकर तुज़्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन-सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? ... फिर जबकि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे, तो ज़्या आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें, जिससे जीवित रहें। वे तो अपनी-अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिए ताड़ना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिए करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं। और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते-सहते पज़्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है (इब्रानियों 12:5-11)।

आवश्यक नहीं कि हमें हमेशा इस बात की समझ हो कि हमारे रास्ते में मुश्किलें *ज़्यों* आती हैं, परन्तु इब्रानियों 12 अध्याय सिखाता है कि, जब कठिन समय आते हैं, तो हमें उन्हें खुशी से स्वीकार कर लेना चाहिए। हमें ''आत्माओं के पिता के और भी अधीन'' (आयत

9) रहना सीखना चाहिए। अपने दिल उसके दिल के साथ मिलाने चाहिए। ऐसा करने से, अंत में हम और भी भक्तिपूर्ण होंगे। हमें मन की वह शांति मिलेगी जो किसी और तरीके से नहीं मिल सकती। ''चैन के साथ धर्म का प्रतिफल'' हमारे जीवनों में बढ़कर परिपज़्व हो जाएगा।

''परमेश्वर की ताड़ना को खुशीसे स्वीकार करना'' दाऊद के जीवन के इस अध्ययन का विषय है। दृश्य से पर्दा उठने पर, हम देखते हैं कि दाऊद को खबर मिली कि अबशालोम हेब्रोन में राजा बन गया है, सेना के अधिकतर लोग उसके साथ हो गए हैं, और वह राजधानी नगर यरूशलेम के उज़र की ओर बढ़ रहा है। दाऊद ने तुरन्त महल के सब लोगों से कहा, ''आओ, हम भाग लें; नहीं तो हम में से कोई भी अबशालोम से न बचेगा'' (2 शमूएल 15:14)।

शीघ्र ही दाऊद का परिवार नगर को छोड़ कर चला गया। इस आशा से कि उनके और अबशालोम की सेनाओं के बीच यरदन नदी पड़ जाएगी, वे पूर्व की ओर निकल गए। जैतून पहाड़ पर चढ़कर, दाऊद को पीछे नगर में रोने की आवाजें सुनाई दीं।

> तब दाऊद जलपाइयों के पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढांपे, नंगे पांव, रोता हुआ चढ़ने लगा; और जितने लोग उसके संग थे, वे भी सिर ढांपे रोते हुए चढ़ गए (15:30)।

यदि हम दाऊद से पूछें कि वह ज़्यों रोया था तो उसका जवाब होगा: ''मैं रो रहा हूं ज़्योंकि पिता के रूप में मैं असफल रहा हूं और अब मेरा अपना बेटा मेरे प्राणों का प्यासा है। मैं रो रहा हूं ज़्योंकि मेरे पापों ने न केवल मुझे, बल्कि उन सब को भी, खतरे में डाला है जिनसे मैं प्यार करता हूं। मैं रो रहा हूं ज़्योंकि परमेश्वर का नगर और उसमें रहने वाले खतरे में हैं। मैं रो रहा हूं ज़्योंकि अब मैं साठ वर्ष का हो गया हूं और लगता है कि मेरी सारी मेहनत व्यर्थ गई।'' एक पल के लिए रुक कर वह फिर कहेगा, ''मैं रो रहा हूं ज़्योंकि परमेश्वर की ताड़ना कठिन है।''

दाऊद के गुमटा हुआ था और वह मार खाया हुआ था, जो अपने पापों के कारण अपने सिर पर पड़े तूफ़ानों से घिरा था। अंदर से वह लहू-लुहान था। अभी भी वह अपने पाप से जूझ रहा था। वह अपने परिवार की समस्याओं से निपटने में अक्षम था। संकट आने पर, वह क्रिया करने के बजाय प्रतिक्रिया करता था। यह दाऊद *ही* था जिसने कहा था: ''आओ, हम भाग चलें'' और जैतून पहाड़ की चढ़ाई चढ़ते हुए, वह राजा कम भिखारी अधिक लगता था, रो रहा था।

इसका अर्थ यह नहीं कि दाऊद खत्म हो चुका था या परमेश्वर का उससे कोई नाता नहीं रह गया था। दाऊद गिर गया था, परन्तु हारा नहीं था। उसे घाव हुआ था, परन्तु पिसा नहीं था। आगे पढ़ते हुए मैं दाऊद के व्यवहार से प्रभावित हो गया कि ऐसी परिस्थिति में भी दाऊद का व्यवहार बदला नहीं था। इस काल की समीक्षा करते हुए, मेरे विचार से मैंने जो

सीखा वह यह था कि परमेश्वर की ताड़ना को खुशी से स्वीकार कर लिया जाना चाहिए।

उसे दूसरों की परवाह थी
(2 शमू. 15:18-22)

दाऊद का परिवार जब यरूशलेम छोड़कर जा रहा था, तो दाऊद अंतिम कमरे में खड़े होकर अपने घर के हर सदस्य को जाते हुए देख रहा था। अंत में, गती इत्तै भी उसके लोगों के साथ आ गया।[1] ''गती'' का अर्थ है कि इत्तै गत नगर का रहने वाला था। वह एक पलिश्ती सेनापति था जो दाऊद की सेना में शामिल करने के लिए हाल ही में सिपाहियों का एक दल लेकर आया था। दाऊद ने उसे रोकर कहा,

> हमारे संग तू ज्यों चलता है? लौटकर राजा के पास रह; ज्योंकि तू परदेशी और अपने देश से दूर है, इसलिए अपने स्थान को लौट जा।[2] तू तो कल ही आया है, ज्या मैं आज तुझे अपने साथ मारा-मारा फिराऊं? मैं तो जहां जा सकूंगा वहां जाऊंगा। लौट जा, और अपने भाइयों को भी लौटा दे; ईश्वर की करुणा और सच्चाई तेरे संग रहे (15:19, 20)।

दाऊद ने अबशालोम को ''राजा'' कहा। जहां तक दाऊद को पता था, उसका शासन खत्म हो चुका था। उसे बिल्कुल पता नहीं था कि भविष्य में ज्या होगा। ऐसी परिस्थितियों में मेरे विचार सज्भवतया अपने पर ही केन्द्रित होंगे कि ''*मेरा* ज्या होगा?'' जब दाऊद ने इत्तै को देखा, तो उसे इत्तै, अपने आदमियों और उनके परिवारों की दृढ़ता पर विचार किया। ''तुज्हारे लिए मेरे साथ जाना आवश्यक नहीं है। जाओ नगर में लौट जाओ। मैं समझ जाऊंगा।''

दाऊद की चिंता बाइबल की महान वचनबद्धताओं में से एक की ओर ध्यान दिलाती है: ''इत्तै ने राजा को उज़र देकर कहा, यहोवा के जीवन की शपथ, और मेरे प्रभु राजा के जीवन की शपथ, जिस किसी स्थान में मेरा प्रभु राजा रहेगा, चाहे मरने के लिए हो चाहे जीवित रहने के लिए, उसी स्थान में तेरा दास ज़ी रहेगा'' (15:21)। जब हमारे जीवन में समस्याएं आ जाती हैं, तो उन पर स्वाज़ाविक प्रतिक्रिया ''हाय मुझ पर'' का कराहना अंधेरे कोने में, हमारे घावों को चाटते हुए, गाते हुए, बेतरतीब कर देता है। यदि हम परमेश्वर की ताड़ना को खुशी से स्वीकार करना सीख लें, तो हमारे लिए अपने आप से बाहर निकलकर दूसरों की आवश्यकताओं की ओर ध्यान देना आसान होगा, विशेषकर उन लोगों पर, जिन्हें हमारे जैसी ही स्थिति का सामना करना पड़ रहा है।

उसने अपना भविष्य परमेश्वर के हाथों में दे दिया
(2 शमू. 15:23-29)

गती इत्तै के किद्रोन का नाला पार करने तक सादोक और एज्यातार आ गए। वे दो याजक थे, जिन्हें दाऊद ने गिबोन में निवासस्थान की और यरूशलेम में सन्दूक की देखभाल करने के लिए नियुज्त किया था। उनके साथ वाचा का सन्दूक लेकर जा रहे लेवी भी थे।[3] वे

राजा के साथ जाने को तैयार थे, परन्तु दाऊद ने कहा,

> परमेश्वर के सन्दूक को नगर में लौटा ले जा। यदि यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो, तो वह मुझे लौटाकर उसको और अपने वासस्थान को भी दिखाएगा; परन्तु यदि वह मुझ से ऐसा कहे, कि मैं तुझ से प्रसन्न नहीं, तौ भी मैं हाजिर हूं, जैसा उसको भाए, वैसा ही वह मेरे साथ बर्ताव करे (15:25, 26)।

दाऊद इस बात को समझता था कि सन्दूक शुभ-अशुभ को जानने के लिए नहीं है कि उसे साथ-साथ रखा जाए। यरूशलेम के लोगों को याद कराने के लिए इस्राएल का वास्तविक राजा यहोवा ही है इसे यरूशलेम में रखना आवश्यक था। दाऊद के कथन की सबसे चौंकाने वाली बात वह व्यवहार है जो यहां से पता चला। दाऊद के शब्दों से *यह पता चलता है* कि परमेश्वर की ताड़ना को खुशी से स्वीकार कर लेने का ज़्या अर्थ है। दोबारा पढ़ें:

> यदि यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो, तो वह मुझे लौटाकर उसको और अपने वासस्थान को भी दिखाएगा; परन्तु यदि वह मुझ से ऐसा कहे, कि मैं तुझ से प्रसन्न नहीं, तौ भी मैं हाजिर हूं, जैसा उसको भाए, वैसा ही वह मेरे साथ बर्ताव करे (15:25, 26)।

हम हैरान होकर देख रहे थे, जब लड़कपन में ही दाऊद ने एक दानव को मारा था। हम हैरान खड़े थे जब एक भगौड़े के रूप में उसने अपने शत्रु शाऊल को हानि पहुंचाने से इनकार किया था। एक सिपाही तथा राजनायक के रूप में हम उसकी सफलता पर चकित थे। ये सब उपलब्धियां परमेश्वर में उसके विश्वास के कारण सम्भव थीं। परन्तु अब जबकि दाऊद थका हुआ था और उसका मन टूट रहा था, तो हम उसमें वह चीज़ देख रहे हैं जो हमने पहले नहीं देखी थी। हम *उसमें परिपक्वता* को देखते हैं। वह यह बिनती नहीं कर रहा था कि ''हे परमेश्वर मुझे विजय दिला।'' वह यह प्रार्थना भी नहीं कर रहा था कि ''हे परमेश्वर, मुझे दिखा कि मुझे ज़्या करना है।'' बल्कि वह परमेश्वर के सामने यह कहते हुए झुका हुआ था, ''मेरे साथ वैसा ही कर जैसा तू चाहता है। यदि तू चाहता है कि मैं फिर से सिंहासन पर बैठूं, तो भी ठीक है। यदि तू नहीं चाहता, तो मुझे यह भी मंजूर है। तू ही जानता है कि अच्छा ज़्या है; मैं नहीं जानता। जैसा तुझे अच्छा लगे वैसा मेरे साथ कर।''

सादोक और एब्यातार अवश्य निराश लगे होंगे जब दाऊद ने उन्हें यरूशलेम लौटने को कहा। दाऊद ने उन्हें बताया कि वे उसके साथ न जाकर उसके अधिक काम आएंगे। वे उसके कान और आंखें हो सकते थे। एक अर्थ में राजा ने कहा, ''जब अबशालोम आता है, तो पता लगाओ कि वहां ज़्या हो रहा है।[4] फिर अपने लड़कों को मुझे खबर देने के लिए भेज देना। हम यरदन के इस पार प्रतीक्षा करेंगे।''[5] संतुष्ट होकर, सादोक और एब्यातार सन्दूक को लेकर नगर में चले गए।

वह अपनी भावनाएं व्यक्त करने से घबराता नहीं था (2 शमू. 15:30-37)

सादोक और एज़्यातार के चले जाने के बाद, दाऊद जैतून पहाड़ की चढ़ाई चढ़ने लगा। यहीं पर दाऊद ''सिर ढांपे, नंगे पांव, रोता हुआ चढ़ने लगा; और जितने लोग उसके संग थे, वे भी'' उसके साथ रोए (15:30)।

ताड़ना मिलना हमें अच्छा नहीं लगता; इससे इन्कार करने की आवश्यकता नहीं है। सम्भव है कि हम अपने आप को आवश्यकता से अधिक लिप्त कर लें (इसके बारे में हम बाद में विस्तार में बात करेंगे।); परन्तु आंसू बहना अच्छा है, और हमें उनसे लज्जित नहीं होना चाहिए। इस बात से इनकार करना कि हम दुखी हैं चंगा होने की प्रक्रिया में बाधा डाल सकता है, जबकि पीड़ा को मान लेना सहायक हो सकता है दाऊद अपने मन की पीड़ा को व्यक्त करने से घबराता नहीं था।

दाऊद की पीड़ा और बढ़ गई जब खबर मिली कि अबशालोम के साथ षड्यन्त्रकारियों में अहीतोपेल भी था। अहीतोपेल दाऊद के विश्वसनीय सलाहकारों में से था; अब उसने दाऊद को धोखा दे दिया। परन्तु दाऊद ने अपने पर तरस खाने में समय नहीं गंवाया, बल्कि अपना मन परमेश्वर के सामने खोल दिया: ''हे यहोवा, अहीतोपेल की सम्मति को मूर्खता बना दे'' (15:31)।

दाऊद की बिनती लगभग उसी समय पूरी होने लगी। जब दाऊद पहाड़ की चोटी पर पहुंचा,[6] तो उसकी मुलाकात एरेकी हूशै से हुई।[7] हूशै को दो बार ''दाऊद का मित्र'' (15:37; 16:16) कहा गया है।[8] वह दाऊद के दरबार का एक विश्वसनीय सदस्य था और दाऊद का सलाहकार था। सादोक और एज़्यातार की तरह हूशै भी दाऊद के साथ जाने को तैयार था, परन्तु एक बार फिर दाऊद ने अपना सिर हिला दिया। ''दाऊद ने उस से कहा, यदि तू मेरे संग [यरदन के] आगे जाए, तब तू मेरे लिए भार ठहरेगा'' (15:33)। दाऊद के लिए जो अंतिम महत्वपूर्ण बात थी वह किसी दूसरे को खिलाना था।

अपने शत्रुओं को नरम करने के लिए, दाऊद ने तुरन्त ध्यान दिलाया कि हूशै अहीतोपेल की सम्मति को मूर्खता बनाने की दाऊद की परमेश्वर से की गई प्रार्थना का उत्तर था:

> परन्तु यदि तू नगर को लौटकर अबशालोम से कहने लगे, हे राजा, मैं तेरा कर्मचारी हूंगा; जैसे मैं बहुत दिनों तेरे पिता का कर्मचारी रहा, वैसे ही अब तेरा रहूंगा, *तो तू मेरे हित के लिए अहीतोपेल की सम्पत्ति को निष्फल कर सकेगा* (15:34)।[9]

उसने हूशै को राजभवन की हर बात सादोक और एज़्यातार याजकों तक पहुंचाने के लिए कहा। उन्होंने वह खबर उसे पहुंचानी थी।

सहायता के लिए उसके पास मित्र थे (2 शमू. 15:21, 24, 32-34; 17:27-29)

कहानी में आगे बढ़ने से पहले मैं एक तथ्य पर ज़ोर देने के लिए रुकना चाहता हूं। हम दाऊद के कई मित्रों को देख चुके हैं जो उसकी सहायता को तैयार थे। अपने पाठ में हम और मित्रों को भी देखेंगे। प्रभु द्वारा ताड़ना मिलने पर, हमें ऐसे मित्र पाने में सहायता मिलती है जो हमें सामर्थ तथा समर्थन देते हैं (सभोपदेशक 4:9, 10, 12)।

दाऊद के इन अधिकतर मित्रों के बारे में हम इसके अलावा और बहुत कम जानते हैं कि उन्होंने उसकी सहायता की। इतना हम अवश्य जानते हैं कि वे दाऊद के मित्र यरूशलेम पर अबशालोम की चढ़ाई के *बाद* नहीं बने थे। बल्कि दाऊद ने इस समय से बहुत पहले उनकी ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया था, और दयालुता की रोटी जो दाऊद ने पानी पर फैंकी थी वापस उसकी ओर आ रही थी (सभोपदेशक 11:1)।

प्रभु की ताड़ना के लिए तैयारी करने का समय ताड़ना आरज़्भ होने पर नहीं, बल्कि इससे पहले, बहुत पहले होता है। जब मौसम विभाग कहता है, ''जुड्सोनिया के बाहर एक मील दूर एक बड़ा तूफ़ान देखा गया है जो नगर की ओर बढ़ रहा है'' तो यह तूफान से बचाव के लिए आश्रय बनाने का समय नहीं है।[10] जब जीवन के तूफ़ान हमारे सिर पर आ पहुंचते हैं, तो मित्रता की छतरी ढूंढ़ने का कोई लाभ नहीं होता।

परमेश्वर की भावी ताड़ना के लिए तैयार होने के लिए हमें परमेश्वर के साथ तथा लोगों के साथ अपने सज़्बन्धों के द्वारा अभी से तैयारी करनी आवश्यक है। ''ऐसा मित्र होता है जो भाई से भी अधिक मिला रहता है'' (नीतिवचन 18:24)।

वह परखा गया था (2 शमू. 16:1-14)

होशै के दाऊद के पास से जाने के बाद, राजा जैतून पहाड़ की पूर्वी ढलान की ओर नीचे गया। जब वह उतर रहा था तो उसे सीबा नामक एक और व्यज़्ति मिला जिसे मपीबोशेत के सामान की जिज़्मेदारी दी गई थी। सीबा उसके लिए रोटी, किशमिश और दूसरे सूखे फल, और दाखमधु का एक जग दो गधों पर रखकर ले आया। राजा के जाने से पहले यह सब देने के लिए, सीबा के लिए कार्य करना आवश्यक था। वह राजा के लिए स्वागत करने वाला दृश्य था।

दाऊद ने सीबा से पूछा कि ज़्या वह जानता है कि मपीबोशेत कहां है।[11] मुझे सीबा के चेहरे पर चालाकी भरी मुस्कान दिखाई देती है जब उसने उज़र दिया, ''वह तो यह कहकर यरूशलेम में रह गया, कि अब इस्राएल का घराना मुझे मेरे पिता का राज्य फेर देगा'' (16:3)। मैं उसे चालाकी भरी मुस्कुराहट के साथ देखता हूं ज़्योंकि मेरा मानना है कि वह खुदगर्ज मौकाप्रस्त आदमी था जो अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए कुछ भी कह सकता था। एक लंगड़ा व्यज़्ति कैसे सोच सकता था कि वह मजबूत, शज़्तिशाली अबशालोम से राज्य छीन सकता है, जिसने लोगों के मनों को जीत लिया था और उसे सेना का समर्थन था। दोनों में से एक बात सत्य होगी: या तो मपीबोशेत पूरा मूर्ख और कृतघ्न व्यज़्ति था, या सीबा झूठा

था। मेरा अनुमान है कि बाद वाली बात सही है।

परन्तु सीबा की दिखावटी दयालुता से प्रभावित होकर दाऊद ने सीबा से कहा कि वह मपीबोशेत की सारी सज़्पज़ि ले सकता है।

यह परिस्थिति कई सच्चाइयों को दिखाती है जो ताड़ना के सज़्बन्ध में हमें जाननी आवश्यक हैं: एक यह है कि जब हम दुखी होते हैं, तो हम असुरक्षित हो जाते हैं। एक यह कि कुछ लोग हमारी असुरक्षा का लाभ उठाना चाहते हैं, जैसे सीबा ने दाऊद का लाभ उठाया। एक विशेष प्रकार का व्यज़्ति घायल लोगों के प्रति वैसे ही आकर्षित होता है जैसे सड़क पर मरने वालों की ओर मांसखोर पक्षी। ऐसा व्यज़्ति अपने स्वार्थी उद्देश्यों के लिए सहानुभूति तथा रुचि दिखाएगा।[12] इसका अर्थ यह नहीं है कि हम रूखे बन जाएं। इसका अर्थ यह है कि हम आसानी से धोखे में आने से बचें।

इससे हमें ताड़ना के उद्देश्य का परिचय मिलता है जिस पर अभी हमने चर्चा नहीं की है। परमेश्वर की ताड़ना जो हमें *परखती* है उसका कोई अर्थ होता है और जब हमारी परीक्षा होती है, तो यह हमें और अच्छा बना देती है (इब्रानियों 12:10; याकूब 1:2-4)। नातान की भविष्यवाणियां पूरी होने पर, दाऊद को कई तरह से परखा गया। उसके विश्वास की परख हुई। उसके मन को परखा गया। उसकी सहनशीलता परखी गई। अबशालोम से भाग जाने के समय ये परीक्षाएं जारी रहीं। उनमें से एक कठिन परीक्षा अभी आने वाली थी।

जैतून पहाड़ की पूर्वी ढलान से नीचे उतरकर, दाऊद बहुरीम गांव में पहुंचा। शिमी नाम का शाऊल का एक कुटुज़्बी दाऊद को कोसता हुआ और उस पर पत्थर फैंकता हुआ निकला:

> कि दूर हो खूनी, दूर हो ओछे, निकल जा, निकल जा! यहोवा ने तुझ से शाऊल के घराने के खून का पूरा पलटा लिया है,[13] जिसके स्थान पर तू राजा बना है; यहोवा ने राज्य को तेरे पुत्र अबशालोम के हाथ कर दिया है। और इसलिए कि तू खूनी है, तू अपनी बुराई में आप फंस गया (16:7, 8)।

मैंने कहा था कि आप के असुरक्षित होने पर सीबा जैसा व्यज़्ति अपने ही स्वार्थी उद्देश्यों के लिए आपका अनुचित लाभ उठाएगा। एक और प्रकार का व्यज़्ति भी आपकी असुरक्षा का लाभ उठाएगा, परन्तु अलग ढंग से। ऐसा व्यज़्ति आपको ठोकर मारेगा जब आप नीचे होंगे, जैसे शिमी ने दाऊद से किया था। बड़ा मुश्किल है कि जब आप आहत होते हैं, तो लोग आपके घावों को चंगा करने के बजाय उन पर नमक छिड़कते हैं! विशेषतया यह तब और भी कठिन हो जाता है जब आक्रमण अनुचित हो, जैसे शिज़्मी ने किया।

अबीशै ने जो दाऊद के साथ था, राजा से बिनती की, ''मुझे ... उसका सिर काटने दे'' (16:9)! यदि मैं दाऊद की जगह होता तो मैं कहता, ''बहुत अच्छा! मेरे सिर पर उसके पत्थर लगे हैं, और मेरे कानों में उसकी आवाज़ गूंज रही है। जा काट डाल!'' जब लोग हमारे घावों और गुमटों को कुरेदते हैं, तो हम बदला लेने की परीक्षा में पड़ जाते हैं। परन्तु

दाऊद ने अपना सिर हिलाते हुए कहा,[14]

> ... वह जो कोसता है, और यहोवा ने जो उससे कहा है, कि दाऊद को शाप दे, तो उससे कौन पूछ सकता, कि तू ने ऐसा ज़्यों किया है ? ... जब मेरा निज पुत्र भी मेरे प्राण का खोजी है, तो यह बिन्यामीनी अब ऐसा ज़्यों न करे ? उसको रहने दो, और शाप देने दो; ज़्योंकि यहोवा ने उससे कहा है। कदाचित यहोवा इस उपद्रव पर, जो मुझ पर हो रहा है, दृष्टि करके आज के शाप की सन्ती मुझे भला बदला दे (16:10-12)।

पुन: हम देखते हैं कि दाऊद ने प्रभु की ताड़ना को खुशी से स्वीकार किया। उसने इस बात को समझा कि शिमी के कार्यों में परमेश्वर का हाथ हो सकता है। उसने परमेश्वर की योजनाओं तथा उद्देश्यों को जानने और समझने का दिखावा नहीं किया। उसने केवल इतना कहा, ''*और* यहोवा ने जो उससे कहा है,'' और यह कि ''*कदाचित* यहोवा इस उपद्रव पर, जो मुझ पर हो रहा है, दृष्टि'' करे। सबसे महत्वपूर्ण, दाऊद ने शिमी के कोसने को खुशी स्वीकार किया। उसने इस कोसने को अपने पाप के एक और परिणाम के रूप में देखा।

जब प्रभु हमें ताड़ता है, तो हमें अपनी अभेद्यता या असुरक्षा से अवगत होकर बदला लेने की परीक्षा से बचना चाहिए। याद रखें हमारी परेशानियों का एक उद्देश्य हमें परखना होता है; जिससे हम परमेश्वर की सहायता से परीक्षा में कायम रहें; और यह कि यदि हम उस परीक्षा का सफलतापूर्वक सामना करते हैं, तो हम अच्छे लोग बन जाएंगे। इसलिए आइए शांत होकर दाऊद की तरह अपने जीवनों में परमेश्वर को कार्य करने दें।

परमेश्वर ने उसकी सहायता की (2 शमू. 16:15-17:23)

16:15 में दृश्य बदलकर यरूशलेम में चला जाता है। नगर के लोगों ने अबशालोम के प्रवेश से, जो सेना से और हेब्रोन से उसके पीछे आने वाली भीड़ से घिरा था बड़ी उत्सुकता दिखाई।[15]

अबशालोम के निकट आने पर, ऐरेकी हूशै शोर मचाने लगा, ''राजा चिरंजीव रहे! राजा चिरंजीव रहे'' (16:16)। हूशै दाऊद के उन मित्रों में से एक था जिन्हें उसने यरूशलेम लौट जाने को कहा था। हूशै के शब्द अस्पष्ट थे (सम्भवत: वे दाऊद के लिए थे, जो अभी भी राजा था)। अबशालोम फूल गया, परन्तु उसे शक था। हूशै ने और अस्पष्ट शब्दों के साथ उसके शक को बढ़ावा दिया: ''जिसको यहोवा और वे लोग, ज़्या वरन सब इस्राएली लोग चाहें, उसी का मैं हूं, और उसी के संग मैं रहूंगा'' (16:18)। ये शब्द अबशालोम के लिए नहीं हो सकते थे ज़्योंकि उसे यहोवा द्वारा नहीं चुना गया था; बल्कि ये शब्द दाऊद के लिए उपयुक्त थे। स्पष्टतया, इन से अबशालोम संतुष्ट हो गया और महल की ओर बढ़ने लगा।

अबशालोम को मालूम नहीं था कि आगे ज़्या होने वाला है। यह दिखाने के लिए कि

वह अपने पिता से नहीं डरता और उसने उसके साथ अपने सभी सम्बन्ध तोड़ लिए हैं, दाऊद के पूर्व सलाहकार अहीतोपेल ने उसे अपने पिता की रखेलों के पास जाने की सलाह दी।[16] फिर अहीतोपेल ने अबशालोम को बिना समय गंवाए दाऊद का पीछा करके उसे पकड़ने की सलाह दी, जब कि वह इधर उधर भटक रहा था:

> मुझे बारह हज़ार पुरुष छांटने दे, और मैं उठकर आज ही रात को दाऊद का पीछा करूंगा। और जब वह थकित और निर्बल होगा, तब मैं उसे पकड़ूंगा, और डराऊंगा; और जितने लोग उसके साथ हैं सब भागेंगे। और मैं राजा[17] ही को मारूंगा। और मैं सब लोगों को तेरे पास लौटा लाऊंगा; ... और समस्त प्रजा कुशल क्षेम से रहेगी (17:1-3)।

अपने पिता की रखेलों के पास जाने की अहीतोपेल की सलाह दुष्टता से भरी थी,[18] परन्तु यह सलाह थी बड़ी जबर्दस्त।[19] यदि अबशालोम इसे मान लेता, तो उसकी विजय निश्चित थी। परन्तु परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध के अनुसार, अहीतोपेल की सलाह को निष्फल करने के विशेष उद्देश्य से हूशै यरूशलेम में था। अबशालोम ने किसी और का भी विचार लेने का फैसला किया। और उसने हूशै की सम्मति ली।

जब अबशालोम ने उसे अहीतोपेल की योजना बताई, तो हूशै ने सिर हिलाते हुए अहीतोपेल की योजना के बेकार होने के तीन कारण बताए: (1) इसमें दाऊद की युद्ध करने की शक्ति और उसकी विशेष टुकड़ियों को कम आंका गया था। ''वे शूरवीर हैं, और बच्चा छीनी हुई रीछनी के समान क्रोधित होंगे'' (17:8)। (2) इसमें दाऊद की दूरदर्शिता को नज़रअंदाज़ गया था। दाऊद छावनी में ही नहीं रहेगा, वह तो किसी गुफ़ा में छिपा होगा (17:9)। इस कारण, जब वे दाऊद के लोगों पर धावा बोलेंगे, तो दाऊद स्वयं उस घेरे से निकल जाएगा। (3) इसमें दाऊद के सैनिक कौशल को नज़रअंदाज किया गया था। हूशै ने वास्तव में कहा, ''दाऊद के आदमी हमें घात करने की प्रतीक्षा में बैठे हैं। यदि हम अब उनका पीछा करने जाते हैं तो हम हार जाएंगे और हमारा उद्देश्य सफल नहीं होगा'' (17:9, 10)।

हूशै ने जो कहा उसमें सच्चाई का एक अंश भी नहीं था। मार खाया हुआ दाऊद यरदन के किनारे सहमा हुआ बैठा था। सैनिक नीति उसके दिमाग में दूर दूर तक नहीं थी। वह खूंखार रीछनी की तरह नहीं बल्कि मार खाए हुए कुत्ते की तरह था। परन्तु दाऊद के पिछले रिकॉर्ड से अबशालोम और उसकी युद्धमण्डली के दिमाग में प्रश्नचिह्न लग गया।

हूशै ने एक वैकल्पिक योजना बताई जिसमें उसने अबशालोम को बताया कि उसे पूरे देश से सेना को इकट्ठा करने की आवश्यकता है। और यह कि अबशालोम को स्वयं सेना की अगुआई करनी चाहिए,[20] ताकि लोगों को पता चल जाए कि विजय उसी की और केवल उसी की है। यदि वे ऐसा करते हैं तो वे दाऊद और उसके आदमियों को नष्ट कर देंगे; हूशै द्वारा दिखाई दाऊद की हार की तस्वीर इतनी स्पष्ट थी कि अबशालोम ने विजयी जलूस में यरूशलेम में अपने आप को देखा। ''तब अबशालोम और सब इस्राएली पुरुषों ने कहा,

एरेकी हूशै की सज़्ज़िज़ अहीतोपेल की सज़्ज़िज़ से उज़म है। यहोवा ने तो अहीतोपेल की अच्छी सज़्पज़ि को निष्फल करने के लिए ठाना था, कि अब अशालोम ही पर विपज़ि डाले'' (17:14)। इस प्रकार, दाऊद की प्रार्थना कि अहीतोपेल की सज़्मति नष्ट हो, का उज़र मिल गया।

जब अहीतोपेल ने देखा कि उसकी सलाह ठुकरा दी गई है, तो इस बुज़ुर्ग आदमी ने अपने गधे पर काठी कसी और अपने नगर में जाकर अपने घर में चला गया और अपने आप को फांसी लगा ली (17:23)।[21]

हूशै ने दाऊद को अवसर दिलवा दिया था, परन्तु वह जानता था कि अबशालोम अपना मन बदलकर तुरन्त अपने पिता का पीछा करने लगेगा। हूशै ने चुपके से जाकर सादोक और एज़्यातार याजकों से कहा, ''इसलिए अब फुर्ती कर दाऊद के पास कहला भेजो, कि आज रात जंगली घाट के पास न ठहरना, अवश्य पार ही हो जाना; ऐसा न हो कि राजा और जितने लोग उसके संग हों, सब नाश हो जाएं'' (17:16)।

सादोक और एज़्यातार ने अपने पुत्रों योनातन और अहीमास की एक दासी के हाथ संदेश भेजा।[22] इन दो जवानों का पता चल गया कि वे दाऊद को बताने के लिए गए हैं, परन्तु उन्हें एक आदमी और उसकी पत्नी द्वारा एक कुएं में छुपा दिया गया[23] और इस प्रकार बच निकलकर वे दाऊद तक खबर पहुंचाने में सफल हो गए। रात को यरदन पार जाना खतरनाक था, परन्तु दाऊद और उसके साथी तुरन्त नदी पार कर गए। ''और पौ फटने तक उन में से एक भी न रह गया जो यरदन के पार न हो गया हो'' (17:22)।

उस अवसर पर दाऊद की जान बचाने के लिए जिज़्मेदार लोगों की कड़ी पर ध्यान दें: हूशै–सादोक और एज़्यातार–एक दासी–योनातन और अहीमास–एक आदमी और उसकी पत्नी जो बहुरीम में रहते थे। परमेश्वर ने आश्चर्यजनक ढंग से काम किया! ऐसे ही अवसरों के कारण दाऊद लिख पाया: ''मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा; इस प्रकार मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाऊंगा'' (भजन संहिता 18:3)।[24]

परमेश्वर ने दाऊद की सहायता करने का काम अभी पूरा नहीं किया था: दाऊद और उसके साथियों के यरदन के पूर्व में सुरक्षित जाने के बाद, वे उज़र और महनैम की ओर बढ़ गए। महनैम ईश–बोशेत का राजधानी नगर था। महनेम में तीन लोग दाऊद के पास सामान लेकर आए। उनके नाम, पाठ में कई नामों की तरह, बाइबल के पाठक के लिए ज़यानक स्वप्न की तरह है: ''अज़्मोनियों के रज़्बा के निवासी नाहाश का पुत्र शोबी, और लोदबार वासी अज़्मीएल का पुत्र माकीर, और रोगलीम वासी गिलादी बर्जिल्लै'' (17:27)। वे ''चारपाइयां, तसले, मिट्टी के बर्तन, गेहूं, जव, मैदा, लोबिया, मसूर, चबेना, मधु, मज़्खन, भेड़–बकरियां, और गाय के दही का पनीर, ...'' लेकर आए, ज़्योंकि उन्होंने कहा कि ''जंगल में वे लोग भूखे प्यासे और थके मांदे होंगे'' (17:28, 29)।

जो लोग दाऊद की सहायता के लिए आए सब एक जैसे नहीं थे। शोबी एक अज़्मोनी, नाहाश का पुत्र था–जो उस अज़्मोनी राजा का भाई था जिसने दाऊद के दूतों का अपमान किया था। माकीर लोदबार का रहने वाला था जो उज़र में था। वह मपीबोशेत का पालन

पोषन करने वाला व्यज़्ति था। (मेरा मानना है कि दाऊद के प्रति माकीर की उदारता का एक कारण यह है कि सीबा सिंहासन पर बैठने की मपीबोशेत की आकांक्षाओं के बारे में झूठ बोल रहा था। यदि मपीबोशेत षड्यन्त्र कर रहा था, तो सज़्भवतया उसमें माकीर का भी हाथ था।) तीसरा सहायक, बर्जिल्लै महनेम के निकट गिलाद का रहने वाला एक धनी व्यज़्ति था।

इन लोगों के सामान लाने पर, हम फिर देखते हैं कि दाऊद के मित्र उसके पास जमा हो रहे हैं और हम दाऊद को उसकी दयालुता का बदला मिलते देखते हैं। परन्तु मैं ज़ोर देना चाहूंगा कि इन सब मित्रों के द्वारा *परमेश्वर* कार्य कर रहा था। परमेश्वर हमें तब भी नहीं छोड़ता जब वह हमें ताड़ना करता है।

उसका दिल टूट गया था
(2 शमू. 17:24-26; 18:1-33)

परमेश्वर ने दाऊद के लिए कुछ और किया: उसने दाऊद को एक सेना दी जिससे वह अपनी रक्षा कर सकता है। यरूशलेम से जाने के समय दाऊद के साथ केवल छह सौ सिपाही थे। परन्तु अध्याय 18 में पढ़ने पर हम देखते हैं कि दाऊद ने अपनी सेना पर ''शहस्त्रपति और शतपति ठहराए'' (आयत 1)।[25] ज़्योंकि दाऊद के तीन सेनापति (आयत 2) थे और ''सहस्त्रपति'' का अर्थ कम से कम दो हज़ार होगा, इसका अर्थ यह हुआ कि दाऊद के छह सौ लोग छह हज़ार तक या इससे भी अधिक बढ़ गए थे![26] जब अबशालोम अपनी सेना इकट्ठी कर रहा था, तो स्पष्टतया बहुत से लोग निकलकर दाऊद के पास आ गए।

परन्तु अंत में अबशालोम ने अपनी विशाल सेना यरदन के पार ले आकर गिलाद में छावनी डाली, जो महनैम से अधिक दूर नहीं था।[27]

यह प्रदर्शन का समय था। दाऊद ने अपनी सेनाओं से कहा, ''मैं भी अवश्य तुज़्हारे साथ चलूंगा'' (18:2)। उन्होंने जवाब दिया, ''तू जाने न पाएगा। ज़्योंकि चाहे हम भाग जाएं, तौभी वे हमारी चिंता न करेंगे; वरन चाहे हम में से आधे मारे भी जाएं, तौभी वे हमारी चिंता न करेंगे। ज़्योंकि हमारे सरीखे दस हज़ार पुरुष हैं;[28] इसलिए अच्छा यह है कि तू नगर में से हमारी सहायता करने को तैयार रहे[29]'' (18:3)।

दाऊद के जवाब पर विचार करें: ''जो कुछ तुज़्हें भाए वही मैं करूंगा'' (18:4)। दाऊद का आत्मविश्वास आगे चलने की क्षमता कम हो गई हो सकती है, परन्तु ताड़ना से उसे फिर से सामर्थ मिल गई: उसने दीनता और नम्रता पाई।

पीड़ा सोच की प्रक्रिया पर असर कर सकती है। जब आपकी ताड़ना की जाती है, तो आवश्यक है कि आपके साथ बात करने में किसी को रुकावट न हो और आप उन लोगों की सलाह लेने से न झिझकें जिन्हें आपसे अधिक स्पष्ट दिखाई देता है।

सेना के आगे बढ़ने पर, दाऊद ने मिन्नत की, ''कि मेरे निमिज़ उस जवान, अर्थात अबशालोम से कोमलता करना'' (18:5)। अबशालोम की युद्धनीति स्पष्ट थी: ''मेरे पिता

को मार दो; दूसरों की कोई बात नहीं।'' दाऊद की युद्धनीति सीधी थी: ''मेरे पुत्र को *न* मारना; दूसरों की कोई बात नहीं।''

अबशालोम की सेना के लिए युद्ध एक विनाश था।[30] गिलाद की जंगली पहाड़ियां[31] उसका विनाश थीं। दाऊद के आदमियों ने, जो जंगली इलाकों में लड़ने में माहिर थे, अबशालोम के आदमियों को घने जंगल में खदेड़ दिया। वे एक एक करके,[32] आसानी से बीस हज़ार मारे गए।[33]

महनैम में जाने की प्रतीक्षा करते हुए दाऊद को होने वाली हानि का ध्यान नहीं था और न ही यह कि कौन जीता। उसे केवल अपने लड़के की चिंता थी। अहीमास भागता हुआ नगर में आया। अहीमास याजक सादोक का बेटा था। जो यरदन की खबर दाऊद के पास लाने वालों में सबसे छोटा था। दाऊद को लगा कि वह अच्छी खबर लाया है (शायद इसलिए ज़्योंकि हार की स्थिति में *कई* लोग नगर में सुरक्षित जगह ढूंढ़ने आते)। अहीमास ने इतना ही कहा, ''कल्याण'' (18:28)। अहीमास के पीछे एक कूशी भी था।[34] जब दाऊद ने पूछा, ''ज़्या वह जवान अर्थात अबशालोम कल्याण से है?'' कूशी ने उज़र दिया, ''मेरे प्रभु राजा के शत्रु और जितने तेरी हानि के लिए उठे हैं, उनकी दशा उस जवान की सी हो'' (18:32)।

> तब राजा बहुत घबराया, और फाटक के ऊपर की अटारी पर रोता हुआ चढ़ने लगा; और चलते चलते यों कहता गया, कि हाय मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे, हाय! मेरे बेटे अबशालोम! भला होता कि मैं आप तेरी सन्ती मरता, हाय! अबशालोम! मेरे बेटे, मेरे बेटे! (18:33)।

हो सकता है कि आपका बच्चा वैसे न लौटे जैसे आप चाहते हों। उसकी जीवनशैली से आपका मन दुखी हो सकता है। जो भी हो, है तो वह आपका बच्चा ही, और उस पर कष्ट आने पर आप अवश्य रोएंगे।

ताड़ना को कष्ट से अलग नहीं किया जा सकता। आपके निकट बहुत से मित्र होंगे जो आपके लिए मरने को तैयार हों। आप को पता हो सकता है कि परमेश्वर आपके साथ है और आपकी सहायता कर रहा है। इसके बावजूद आंसू तो बहेंगे। आपका दिल टूटेगा। ताड़ना और पीड़ा को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। ''ज़्योंकि हर एक व्यज़्ति अपना ही बोझ उठाएगा'' (गलातियों 6:5)।

उसे योआब द्वारा डांटा गया था (2 शमू. 19:1-8क)

मैंने पहले इस बात का उल्लेख किया था कि ताड़ना होने पर अच्छा नहीं लगता और हमें इससे इनकार नहीं करना चाहिए। भावनाओं को व्यज़्त करना चंगा होने की प्रक्रिया का एक भाग है। मैंने यह भी कहा था कि अपने आप में आवश्यकता से अधिक खो जाना भी संभव है। आवश्यकता से अधिक खो जाना स्वस्थ *नहीं* है। यह हमें निचोड़ कर हमारे

नज़दीकी लोगों को निराश करता है। दाऊद अपने आप में खो गया था।

यह तथ्य कि दाऊद पिस गया था समझ में आता है। वह न केवल अबशालोम के लिए, बल्कि अपने लिए भी और आने वाले हालात के लिए भी रोया था। परन्तु उसका शोक या दुख असंगत था। उसके सिंहासन और उसके बेटे में से केवल एक ही बच सकता था। अपने शोक को आवश्यकता से अधिक और लोगों में व्यज़्त करने से यह संकेत मिला कि केवल वह अपनी ही पीड़ा के बारे में सोच रहा है और उसे दूसरों की कोई परवाह नहीं है। केवल वही नहीं था जिसका कोई अपना खोया हो। युद्ध के मैदान में कम से कम बीस हजार लोग मारे गए थे। हजारों लोगों ने अपने पुत्रों, पोतों, पतियों, पिताओं व भाइयों के लिए शोक किया होगा।

पहले, दूसरों के बारे में सोचना दाऊद की सबसे बड़ी ज़ूबी थी। अब अबशालोम को खोने की पीड़ा के परदे में उसने एक सुरंगी दर्शन बना लिया:

> इसलिए उस दिन की विजय सब लोगों की समझ में विलाप ही का कारण बन गई; ज़्योंकि लोगों ने उस दिन सुना, कि राजा अपने बेटे के लिए खेदित है। और उस दिन लोग ऐसा मुंह चुराकर नगर में घुसे, जैसा लोग युद्ध से भाग आने से लज्जित होकर मुंह चुराते हैं (19:2, 3)।

दाऊद के दुख से उसके सब अनुयायियों के जीवन पर कुछ प्रभाव पड़ा।

योआब ने जो कभी कूटनीतिज्ञ नहीं था, दाऊद की आलोचना की।[35] 19:5-7 में उसके कहने का अर्थ था, ''तेरे आदमियों ने तेरे लिए अपने प्राण जोखिम में डाल दिए, और तू अब उन्हें ऐसे जताता है जैसे वे जीत कर नहीं हार कर आए हों! तुमने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि उनमें से सब मर भी जाते और अबशालोम जीवत रहता तो तुम प्रसन्न होते। उनके पास जाकर उनकी सराहना कर! यदि तू ऐसा नहीं करता, तो सुबह तक कोई तेरा समर्थक नहीं रहेगा। फिर तुझे पता चलेगा कि *वास्तव में* कठिन समय ज़्या होता है!''[36]

ये शज़्द कठोर थे, पीड़ा दायक थे, परन्तु दाऊद इनकी सच्चाई से इनकार नहीं कर सकता था। योआब की बातों ने जैसे दाऊद के विवेक को जगा दिया।

जब प्रभु द्वारा हमारी ताड़ना होती है तो कई बार वह पीड़ा इतनी अधिक हो जाती है कि हम अविवेकी होकर कार्य करते हैं और दूसरों को कष्ट पहुंचाते हैं। तब हमें ऐसे मित्रों की आवश्यकता होती है जो नपे-तुले शज़्दों में हमारे विवेक को जगा सकें। उस समय यह कष्टदायक लगेगा; हम उनकी बेबाकी पर क्रोधित होंगे या उनका बुरा मानेंगे; परन्तु यही वे मित्र हैं, जो शायद हमारे सबसे अच्छे मित्र हैं। ''जो घाव मित्र के हाथ से लगें वे बैरी के चुज़्बन से अच्छे हैं'' (नीतिवचन 27:6; LB)।

दाऊद अपने शोक के कमरे से निकलकर, बाहर फाटक में गया और उसने आने वाले लोगों के प्रति अपनी चिंता प्रकट की।[37] किसी के गले लगकर रोया। किसी को उसने धन्यवाद दिया। किसी को बधाई दी। अंत में लोग अपनी विजय का जश्न मनाने को तैयार थे।

शोक करने का समय है, परन्तु नए सिरे से आरज़्भ करने का भी समय है (सभोपदेशक 3:4)। हमारी पीड़ा पर मरहम लगाने का समय है, परन्तु अपनी पीड़ा को अंधेरे कमरे में छोड़ कर किसी और की चंगाई करने का भी समय है।

उसने शांति बनाने का प्रयास किया (2 शमू. 19:8ख-20:26)

विद्रोह केवल कुछ सप्ताह तक चला था। गृह युद्ध रिकॉर्ड समय में खत्म हो गया था। इसका अर्थ यह नहीं था कि सब कुछ पहले की तरह हो गया था। विभाजन के बाद का परिणाम पहले होने वाली गड़बड़ी से अधिक विनाशकारी हो सकता है। अध्याय 19 के अंतिम भाग में, दाऊद ने अतीत को भुलाकर एक नमूना पेश करते हुए, देश में शांति बहाली का प्रयास किया।

लेखक तथा टीकाकारों के पास इस अनुमान का कि यरूशलेम पर लौटकर दाऊद को ज़्या करना चाहिए था या ज़्या नहीं, दूसरा अनुमान है: (1) दाऊद घबराया हुआ था, उसका मन अभी भी पीड़ा और दोष से पीड़ित था। (2) दाऊद को एक के बाद एक तुरंत निर्णय लेने थे, जो कि आसान काम नहीं था। (3) जब आप बात का बतंगड़ बनाने के लिए गड़बड़ करते हैं तो आप जीतने की अवस्था में नहीं होते। कुल मिलाकर शांति बहाली के लिए दाऊद के प्रयास सराहनीय थे।

19:8 का अंतिम भाग वहां से आगे बढ़ता है, जहां 18:16, 17 समाप्त होता है। जब हारे हुए इस्राएली घर लौटे, तो उन्हें अंत में याद आया कि वे अबशालोम को राजा के रूप में अभिषेक करने के समय कितनी आसानी से भूल गए थे कि उनके शत्रुओं को दाऊद ने ही हराया था और दाऊद ने ही उन्हें समृद्धि दिलाई थी। आयत 10 के अंत में उनके शज़्द दिलचस्प हैं: ''तो अब *तुम* ज़्यों चुप रहते? और राजा को लौटा ले आने की चर्चा ज़्यों नहीं करते?'' ज़्या आपको उनकी बात सुनाई देती है?

''इस गड़बड़ी का दोषी *मैं* नहीं हूं। गलती *तुज़्हारी* है!''

''तुम मूर्ख बना रहे हो। मैंने तुज़्हें अबशालोम के राज्याभिषेक पर देखा था!''

''मैं तो वहां इसलिए गया था कि मैं देखना चाहता था कि ज़्या हो रहा है। सचमुच, मैं तो उसके विरुद्ध ही था!''

''बेशक तुम थे! अब हमारा कोई राजा *नहीं* है और हम आसानी से पलिश्तियों का शिकार बन सकते हैं। किसी को दाऊद के पास जाकर उसे वापस लाना चाहिए।''

''ठीक है, तुम जाओ।''

''नहीं, *तुम* जाओ।''

दाऊद को खबर मिली कि उज़री गोत्र के लोग ज़्या बातें कर रहे हैं। परन्तु दाऊद यहूदा के गोत्र के बारे में अधिक चिंतित था। हेब्रोन का विद्रोह यहूदा में समाप्त हो गया था। मुज़्य खिलाड़ी यहूदा के गोत्र के अबशालोम; उसका सलाहकार, अहीतोपेल; उसकी सेनाओं का कमांडर अमासा थे। दाऊद ने उसे वापस आने के लिए अगुआई करने के लिए यहूदा के

अगुओं से आग्रह करने के लिए सादोक और एज़्यातार को संदेश भेजा। इस प्रकार उसने अगुओं को यह जता दिया कि वह उनके विद्रोह को अपने विरुद्ध नहीं मानेगा।

इसके बाद, दाऊद ने योआब की जगह अमासा को सेना का सेनापति बना दिया।[38] अमासा को देशद्रोह के लिए मुकदमा चलाकर मृत्युदंड दिया जा सकता था, परन्तु दाऊद ने उसे क्षमा कर दिया। उसे सेनापति बनाकर दाऊद ने यहूदा (ज़्योंकि अमासा इसी गोत्र से था) और पूरे इस्राएल की ओर (ज़्योंकि अमासा ने इस्राएली सेना की अगुआई की थी) मित्रता का हाथ बढ़ाया।

यद्यपि दाऊद विरोधी पक्ष था परन्तु उसने विरोध करने वालों के साथ सज़्बन्ध बहाल करने में अगुआई की जो हम सब के लिए एक उदाहरण होना चाहिए। याद रखें कि ताड़ना का एक उद्देश्य परखना है। कोई परीक्षा यह देज़ने के लिए हो सकती है कि हमारे मन क्षमा करने वाले हैं या नहीं (सभोपदेशक 4:31, 32)।

दाऊद के कार्यों से यहूदा के लोग प्रसन्न हुए और एक व्यज़्ति के रूप में उन्होंने यह कहकर संदेश भेजा, ''तू अपने सब कर्मचारियों को संग लेकर लौट आ'' (19:14)।

दाऊद और उसका परिवार और उसके मित्र यरूशलेम की ओर चल पड़े। दाऊद के साथ गिलादी बर्जिल्लै था, जो महनैम में दाऊद के लिए सामान लाया था।[39] दाऊद में कृतज्ञता कूट-कूट कर भरी हुई थी। यरदन नदी के पास आकर, दाऊद ने इस बूढ़े आदमी को अपने साथ यरूशलेम में लौट जाने का आग्रह किया। बर्जिल्लै ने उज़र दिया कि वह बहुत बूढ़ा है और महल के सुख और आनंद नहीं भोग सकता। उसने अपने पुत्र की ओर इशारा किया[40] और कहा, ''परन्तु तेरा दास किज़्हाम उपस्थित है; मेरे प्रभु राजा के संग वह पार जाए; और जैसा तुझे भाए वैसा ही उससे व्यवहार करना'' (19:37)। दाऊद मान गया, फिर अपने बूढ़े मित्र को गले लगाया और उसे आशीष दी। कठिन समयों में सहायता करने वालों को कभी न भूलें!

जब दाऊद यरदन पर पहुंचा, तो उसे यहूदा से बड़ी अनिश्चितता का सामना करना पड़ा जिसके लोग राजा का अपने घर में आने पर स्वागत करने आए थे। मैं राजा को देखकर उनके चिल्लाने की आवाज सुन सकता हूं, रात के अंधेरे में राजा चोरी से ज़्यों आया है!

दाऊद को वे लोग भी मिले जो केवल अपने बारे में सोचते थे, जो उस आनंददायक जश्न का लाभ उठाना चाहते थे। सीबा वही था। कोई संदेह नहीं कि यरूशलेम में दाऊद की वापसी और कहानी के मपीबोशेत वाले पक्ष को सुनकर वह परेशान था। राजा को अपने कर्ज तले रखने की कोशिश करते हुए, सीबा और उसके पुत्र और सेवक दाऊद और उसके घराने को यरदन के पार ले गए।[41]

शिमी वहीं था, वही शिमी जिसने यरूशलेम से राजा के बाहर जाने पर उसे कोसा और उसे पत्थर मारे थे? आपको मालूम है कि जब उसने सुना कि दाऊद राजधानी नगर में लौट रहा है तो वह घबरा गया था? शिमी ने अपने आप को नदी के किनारे गिरा कर दया की भीज़ मांगी थी। वह चिल्लाया था, ''मैंने पाप किया'' (19:20)।[42] वह बिन्यामीन के गोत्र से आने वाले एक हजार लोगों में से था। शिमी ने उनकी ओर अपना हाथ हिलाया और

कहा, ''घर में तुम्हारा स्वागत करने के लिए उज़री गोत्रों में हम सबसे पहले हैं''![43]

सामान्य की तरह अबीशै वहीं पर शिमी को मारने को तैयार था। अबीशै के पास हर समस्या का एक ही हल था। (वह एक महान सैनिक था, परन्तु पड़ोसी के रूप में आप उसके साथ रहना पसंद नहीं करेंगे!) एक अर्थ में दाऊद ने कहा, ''आज का दिन आनंद करने का है, न कि लहू बहाने का।'' उसने अपने कदमों में झुके हुए आदमी से कहा, ''तुझे प्राण दंड न मिलेगा'' (19:23)।[44]

यरदन से, दाऊद और उसके साथी यरूशलेम की ओर बढ़ते रहे। कोई संदेह नहीं कि मार्ग में जहां से वह गुज़रता था, वहां बहुत बड़ी भीड़ शोर मचाती और आनंद करती थी।

यरूशलेम के निकट आने पर, राजा की मुलाकात मपीबोशेत से हुई। यह जवान बे-घर आवारा की तरह लग रहा था। ''उसने राजा के चले जाने के दिन से उसके कुशल क्षेम से फिर आने के दिन तक न अपने पावों के नाखून काटे, और न अपनी दाढ़ी बनवाई, और न अपने कपड़े धुलवाए थे'' (19:24)। मपीबोशेत की यह कोई पहेली नहीं थी; परमेश्वर की प्रेरणा पाया लेज़क बताता है कि वास्तव में ऐसा था। सिंहासन पर बैठने का षड्यंत्र रचने वाले आदमी की ऐसी प्रतिक्रिया उसके व्यवहार से कुछ मेल नहीं खाती; परन्तु अपने राजा और मित्र के आने पर टूटे हुए मन वाले व्यज़्ति से अवश्य मेल खाती है।

मपीबोशेत को देखकर दाऊद के मन में सीबा की कहानी के दूसरे विचार आने लगे। उसने पूछा, ''हे मपीबोशेत, तू मेरे संग ज़्यों नहीं गया था?'' (19:25)। मपीबोशेत का जवाब दिल के तार खींच लेता है:

> हे मेरे प्रभु, हे राजा, मेरे कर्मचारी [सीबा] ने मुझे धोखा दिया था; तेरा दास जो पंगु है; इसलिए तेरे दास ने सोचा, कि मैं गदहे पर काठी कसवा कर उस पर चढ़ राजा के साथ चला जाऊंगा और मेरे कर्मचारी ने मेरे प्रभु राजा के सामने मेरी चुगली खाई है। परन्तु मेरा प्रभु राजा परमेश्वर के दूत के समान है;[45] और जो कुछ तुझे भाए वही कर ... तू ने अपने दास को अपनी मेज पर खाने वालों में गिना है। मुझे ज़्या हक है कि मैं राजा की ओर दोहाई दूं? (19:26-28)।

मैं दाऊद को यह सोचते देखता हूं, ''अब मैं ज़्या करूं?'' अंत में उसने कहा, ''उस भूमि को तुम और सीबा आपस में बांट लो'' (19:29)। यह स्थीयी हल नहीं था, परन्तु दाऊद ने नुकसान की भरपाई करने की कोशिश की।[46] मपीबोशेत ने खुशी से जवाब दिया, ''उसी को सारा दे दे, ... मैं इसी से संतुष्ट हूं कि तू वापस आ गया है'' (19:30; LB)।

भयंकर परीक्षा के बाद के परिणाम में, आप कई बार पाएंगे कि आपने रुखे शज़्द बोले हैं, भावनाएं आहत की हैं या गलत निर्णय लिए हैं। ऐसा हो तो परमेश्वर का धन्यवाद करें कि आपको एक और मौका मिला है, और अपने पूरे प्रयास में मामले को मजबूत करे। यह टुथ-पेस्ट को फिर से ट्यूब के अंदर डालने की कोशिश करने की तरह हो सकता है, परन्तु आप अपनी पूरी कोशिश करें। हो सकता है कि परमेश्वर आप को मपीबोशेत की आशीष दे जो आपके प्रयासों की सराहना करे।

समस्याएं खत्म नहीं होतीं
(2 शमू. 19:40-20:26)

शांति बहाली तथा सज़्बन्धों में सुधार के लिए दाऊद जो कुछ कर सकता था उसे करने के बाद वह नगर में रहा। भीड़ की ओर हाथ हिलाते हुए मैं दाऊद के यह विचार करने की कल्पना करता हूं, ''अब मुझे उज़्मीद है कि इसे पीछे छोड़कर मरहम लगाने की प्रक्रिया आरज़्भ कर सकते हैं।''

यह ऐसा नहीं था। जैसे ही दाऊद सिंहासन पर लौटा, उज़री गोत्रों की ओर से और यहूदा के गोत्र से आए प्रतिनिधियों ने राजा की वापसी के सज़्बन्ध में अपने लोगों से होने वाले दुर्व्यवहार का आरोप लगाते हुए उस पर कीचड़ उछाला। एक गुट ने राजा के गले में चज़्की का पाट बांध दिया था तो दूसरे ने उसे समुद्र में फैंक दिया; अब वे इस पर झगड़ रहे थे कि उसे बाहर निकालने का अधिकार किसे है!

उज़री गोत्रों की आपसी कलह के परिणामस्वरूप एक और विद्रोह का प्रयास ''शेबा नामक ... ओच्छा पुरुष'' (20:1)। इस विद्रोह को दबाने के लिए योआब ने अमासा को मार दिया ताकि वह दाऊद की सेना के सेनापति के रूप में अपने काम पर वापस आ सके (नोट 2 शमूएल 20:23)।

मैं दाऊद को आकाश की ओर देखते आह भरते, प्रार्थना करते हुए, ''हे प्रभु, मुझे सामर्थ दे!'' देखता हूं ।

वह यहोवा पर निर्ज़र था

इस पाठ को समेटते हुए हमें पूछना चाहिए, ''चलते रहने के लिए दाऊद को सामर्थ कैसे मिली?'' इसका उज़र है कि परमेश्वर उसके साथ था (नोट 2 शमूएल 18:28, 31)। भजन संहिता 3 और 4 के आरज़्भ से पहले टिप्पणियां देखें। ये दाऊद की सुबह और शाम की प्रार्थनाएं हैं, ''जब वह अपने पुत्र अबशालोम के सामने से भागा जाता था।'' दोनों भजन इन शज़्दों से आरज़्भ होते हैं:

> हे यहोवा मेरे सताने वाले कितने बढ़ गए हैं!
> वे जो मेरे विरुद्ध उठते हैं बहुत हैं। ...
> परन्तु हे यहोवा, तू तो मेरे चारों ओर मेरी ढाल है,
> तू मेरी महिमा और मेरे मस्तक का ऊंचा करने वाला है
> (भजन संहिता 3:1-3)।

वे इन शज़्दों के साथ समाप्त होते हैं:

> हे यहोवा तू अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका!
> तू ने मेरे मन में से कहीं अधिक आनन्द भर दिया है, ...
> मैं शांति से लेट जाऊंगा और सो जाऊंगा;

ज़्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को
एकांत में निश्चिन्त रहने देता है
(भजन संहिता 4:6-8)।

जब मुश्किलें हमारे रास्ते में आती हैं, तब हम अपनी मुट्ठियां परमेश्वर की ओर घुमा सकते हैं या प्रार्थना, विनती और स्तुति में हाथ ऊपर उठा सकते हैं। दाऊद ने अशान्त समयों में भी ऐसा ही किया ज़्योंकि वह परमेश्वर पर भरोसा रखता था।

सारांश

अपने पाठ में, परमेश्वर की ताड़ना को खुशी से स्वीकार कर लेने के लिए मैंने कई सुझाव दिए हैं। उनमें से कुछ ये हैं:

अपना भविष्य परमेश्वर के हाथों में दे दो। परमेश्वर आप को छोड़ता नहीं है, तब भी जब वह आप को ताड़ रहा होता है।

परमेश्वर के साथ और दूसरों के साथ सज़्बन्ध मज़बूत करके भविष्य की समस्याओं के लिए अभी से तैयारी करें।

उन मित्रों के लिए जो आप की सहायता करते व स्थिर रखते हैं, परमेश्वर का धन्यवाद करें, और उन्हें भूलें नहीं।

उन मित्रों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें, जिन्होंने उस समय आप के विवेक को जगाया जब आप पाप में लिप्त थे।

अपनी भावनाएं व्यज़्त करें डरें नहीं, परन्तु अपने पर तरस खाने में अधिक ध्यान न दें।

अपने आप से बाहर आकर दूसरों की, विशेषकर आपके साथ होने वाली घटना से प्रभावित होने वालों की आवश्यकताओं पर ध्यान लगाएं।

सावधान रहें कि पीड़ा आपकी स्पष्ट सोच पर असर डाल सकती है। दूसरों की सलाह लेने को तैयार हों जिन्हें स्थिति आपसे अधिक स्पष्ट दिखाई देती हो।

जब आप फिर से स्पष्ट देख सकते हों, जब आप पाएं कि आपने कुछ गलत निर्णय लिए हैं, तो इन्हें मानने में अधिक घमण्ड न करें और अपनी गलतियों को सुधारें।

ताड़ना मिलने पर अपनी अभेद्यता के प्रति सावधान रहें। एक और बात, इसका लाभ उठाने से बचें। दूसरी ओर विद्रोह करने की परीक्षा से बचें।

याद रखें कि ताड़ना का एक उद्देश्य हमें परखना है और यह कि परीक्षा में सफल हो जाने पर हम अच्छे लोग बन जाएंगे।

हमें *सबसे अधिक* प्रभावित दाऊद के व्यवहार ने किया। एक बार फिर दाऊद के शज़्दों पर ध्यान दें: ''यदि यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो, तो वह मुझे लौटाकर उसको और अपने वासस्थान को भी दिखाएगा; परन्तु यदि वह मुझ से ऐसा कहे, कि मैं तुझ से प्रसन्न नहीं, तौ भी मैं हाजिर हूं, जैसा उसको भाए, वैसा ही वह मेरे साथ बर्ज़ाव करे'' (15:25, 26)। दाऊद ने कहा, ''मैं अपने आपको परमेश्वर के हाथ में देता हूं। वह मुझ से जैसे चाहे कर सकता है।

मुझे उस पर भरोसा है कि वह अच्छा ही करेगा'' (नोट भ.सं 30:4, 5)।

''हे परमेश्वर, जब समस्याएं हमारे जीवनों में घिर आएं, तो हमें अपने दास दाऊद वाला व्यवहार दे। हमें यह समझने में सहायता कर कि तू हमें इसलिए नहीं ताड़ता कि तू हम से घृणा करता है कि बल्कि इसलिए ताड़ता है ज़्योंकि तू हम से प्रेम करता है। हे पिता, जो तू हमारे लिए करने का प्रयास करता है हम उसका कितनी बार विरोध करते हैं। हमारी सहायता कर कि हम तेरी ताड़ना *को खुशी से* मान लें। प्रभु यीशु के नाम में। आमीन।''

प्रवचन नोट्स

दाऊद के आदमियों ने उसे अबशालोम से युद्ध के दौरान नगर में रहने के लिए कहा था, इसलिए सेवानिवृति अर्थात ''लगाम दूसरों के हाथ में देना'' पर पाठ के लिए यह अच्छा समय हो सकता है।

जिस प्रकार पाठ में ध्यान दिया गया, भजन संहिता 3 और 4 दाऊद की ''सुबह और शाम की प्रार्थनाएं'' थीं, जब वह अबशालोम से भागता था। भजन संहिता 41 को अहीतोपेल के दाऊद के विरुद्ध होने के सज़्बन्ध में माना जा सकता है; विशेषकर आयत 9 पर ध्यान दें (बाद में यही आयत यूहन्ना 13:18 में यहूदा पर लागू की गई थी)। सुझाव दिया गया है कि भजन संहिता 42 और 43 दाऊद के यरदन नहीं पार करने के बाद और भजन संहिता 61 और 62 महनैम में लिखे गए थे। भजन संहिता 7, 20, 23, 27, 37, 38, 40 दूसरे भजन हैं जिनके इस काल के दौरान लिखे जाने का सुझाव दिया गया है।

टिप्पणियां

[1]बाइबल इस बारे में अस्पष्ट है कि 2 शमूएल 15:18 वाले छह सौ लोग इज़ै के साथ आने वाले लोग थे या वे छह सौ जिन्हें हम पहले देख चुके हैं, जो जंगल में दाऊद के साथ थे। मेरा विचार है कि वे बाद वाले थे। ज़्योंकि कई आयतें इज़ै के लोगों की बहुसंज़्या का उल्लेख करती हैं, ज़्योंकि दाऊद ने बाद में अपनी सेना के एक तिहाई पर सेनापति नियुज़्त कर दिया, सज़्भतया इज़ै के साथ काफ़ी लोग थे। [2]यह यरूशलेम में उनके कमरों की बात है। [3]NIV में, एज़्यातार ने सब लोगों के नगर छोड़कर जाने तक बलिदान भेंट किए (2 शमूएल 15:24)। [4]दाऊद ने सादोक को ''दर्शी'' कहा (2 शमूएल 15:27)। सज़्भवतया यह दाऊद के ऊरीम और तुज़्मीम वाले इपोद का इस्तेमाल करने के लिए प्रभु से प्रश्न की बात है। सादोक ऐसी स्थिति में था कि पता लगाए कि ज़्या हो रहा है। [5]दाऊद ने कहा कि वह ''जंगल के घाट के पास'' प्रतीक्षा करेगा (2 शमूएल 15:28)। यह कोई ऐसा स्थान होगा जहां यरदन नदी में से चलकर पार किया जा सकता था; यह स्थान याजकों को मालूम था। [6]दूसरा शमूएल 15:32 कहता है, ''दाऊद चोटी तक पहुंचा जहां परमेश्वर को दण्डवत किया करते थे।'' इसका अर्थ यह हो सकता है कि दाऊद परमेश्वर की आराधना करने के लिए रुका या इसका अर्थ यह हो सकता है कि सज़्मेलन ''ऊंचे स्थानों'' में से एक पर था। जहां परमेश्वर की आराधना होती थी। मन्दिर के बनने के बाद, ऊंचे स्थान मिटा दिए गए थे (परन्तु बहुत से राजाओं ने नहीं मिटाए)। ऐरेकी लोग बेतेल के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र के निवासी थे (यहोशू 16:2)। [8]2 शमूएल 16:17 भी देखें। बहुत से विद्वान दाऊद के साथ हूशै के सज़्बन्ध के साधारण विवरण के बजाय इसे एक पद मानते हैं (नोट 1 राजा 4:5)। परन्तु दाऊद के दरबार

में हूशै पर जितना भी भरोसा किया जा सकता था उससे दाऊद के साथ उसकी मित्रता पर कोई प्रभाव नहीं था। वास्तव में दाऊद द्वारा हूशै को दी गई सेवा के लिए निजी मित्रता का होना आवश्यक था। [9]दाऊद के जीवन की कहानियों में जिनमें बहुत झूठ था यह एक और कहानी है। एक बार फिर मैं आप को याद दिलाता हूं कि आवश्यक नहीं कि इस तथ्य, कि बाइबल किसी घटना का उल्लेख करती है, का अर्थ इसे परमेश्वर की स्वीकृति है। दाऊद हो या उसका कोई मित्र, हमें बाइबल के किसी पात्र के हर काम का बचाव करने की आवश्यकता नहीं है। [10]जुड्सोनिया, आरकैंसा, पचास के दशक में एक बड़े तुफ़ान से पूरी तरह साफ हो गया था। अपने सुनने वालों को ऐसा उदाहरण बताएं जिससे वे परिचित हों।

[11]ज़्योंकि मपीबोशेत दाऊद के मेज़ पर खा रहा था, इसलिए इस जवान को खबर पहुंचाई गई होगी जब दाऊद ने यरूशलेम छोड़ने के आदेश दिए। [12]खबर उदाहरणों से भरी पड़ी है, विशेषकर उन लोगों के जो पुराने और निर्बल लोगों का शिकार करते हैं। व्यापार बढ़ाने के लिए कलाकर बुज़ुर्गों को लूटते हैं। धार्मिक और/या दानी कार्य के कलाकर अपनी वसीयतें अपने पक्ष में कराने के लिए विधवाओं को लेते हैं। [13]शिमी मानता होगा कि शाऊल और उसके पुत्रों का जिज़्मेदार दाऊद था। बाहर से राजा अकीश के साथ निष्ठावान लगता था। या शायद उसने दाऊद पर इशबोशेत की मृत्यु का जिज़्मेदार होने का आरोप लगाया। या, यदि 2 शमूएल 21:1-14 की घटनाएं पहले घटीं तो शायद शिमी के मन में यही घटनाएं थीं। [14]दाऊद ने अपनी बात इन शब्दों में आरज़्भ की: ''सरूयाह के बेटो, मुझे तुम से ज़्या काम?'' (2 शमूएल 16:10)। सरूयाह दाऊद की बहन थी और ''सरूयाह के बेटे'' योआब और अबीशै थे। योआब भी दाऊद के साथ था (2 शमूएल 18:2)। ''मुझे तुम से ज़्या काम?'' का अर्थ है ''हमारा दृष्टिकोण अलग अलग है।'' [15]अबशालोम की चाल 2 शमूएल 17:4 में सफल होती लगती है जहां संकेत मिलता है कि ''इस्राएल के सब पुरनिये'' उसके साथ थे। ''इस्राएल'' सज़्भवत: दस उज़री गोत्रों को ही नहीं बल्कि समस्त गोत्रों को कहा गया है। [16]''मनुष्य जो कुछ बोता है'' पाठ में अहीतोपेल पर टिप्पणियां तथा इस घटना को देखें। [17]अहीतोपेल ने दाऊद को ''राजा'' कहा; पुराने सलाहकार को मालूम था कि सिंहासन पर किसे होना चाहिए। [18]यह परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध था (लैव्यव्यवस्था 20:11; 1 कुरिन्थियों 5:1 भी देखें)। [19]दूसरा शमूएल 17:14 इसे ''उज़म सज़्मज़ि'' कहता है, उज़म, अर्थात अबशालोम के लिए उपयोगी। [20]जहां तक हम जानते हैं, सैनिक मामलों में अबशालोम को कोई अनुभव नहीं था। युद्ध में, स्पष्टतया अबशालोम ने कोई हैल्मट या हथियार नहीं पहना हुआ था। और शायद उसके पास कोई चाकू या तलवार भी नहीं थी। हूशै ने अबशालोम को हराने के लिए उसके अहंकार की व्यर्थता पर विचार किया।

[21]यह बाइबल में लिखित चार आत्महत्याओं में से एक है। सुझाव दिया गया है कि अहीतोपेल ने स्वयं को मार लिया ज़्योंकि वह जानता था, कि जब उन्होंने उसकी सलाह नहीं मानी कि अबशालोम का उद्देश्य सफल नहीं हुआ और उसे डर था कि दाऊद उसे मार डालेगा तो उसने फांसी लगा ली। प्रभु ने चाहा, तो आत्महत्या के विषय पर एक भावी पुस्तक में शाऊल पर खोज की जाएगी। [22]दाऊद तक खबर पहुंचाने के लिए एक विस्तृत योजना तैयार की गई थी (2 शमूएल 15:34-36)। दो बेटे शहर की दीवारों से बाहर खड़े थे, ज़्योंकि नगर में प्रवेश करने और वहां से जाने पर उन पर शक हो सकता था (2 शमूएल 17:17)। वे दीवारों से बाहर किद्रोन घाटी में एन-रोगेल नामक झरने के पास रुके थे। पानी लेने के लिए झरने पर जाने वाली दासी की ओर किसी का ध्यान नहीं जाना था। [23]यह एक दिलचस्प कहानी है जो हमें राहाब द्वारा छिपाए दो जासूसों की कहानी याद दिलाती है। आप यहां रुककर जवानों के लिए लिखा गया गीत, जैसे ''प्यारो हिज़्मत बांधो'' गंवा सकते हैं। [25]इनमें से एक सेनापति गती इज़ै था। दाऊद के प्रति उसकी वचबद्धता का प्रतिफल दिया गया था। [26]जोसेफस कहता है कि दाऊद की सेना केवल चार हज़ार थी। शायद। [27]2 शमूएल 17:24-26. अबशालोम ने अमासा को सेना पर ठहरा दिया। अमासा दाऊद का भानजा और अबशालोम का रिश्ते का भाई था। [28]शतरंज के खेल में, राजा को जीतना सबसे महत्वपूर्ण होता है। यदि आप अपने राजा को बचा कर विरोधी के राजा को जीत लेते हैं, तो मोहरों का इतना महत्व नहीं रह जाता। यहां ऐसी ही स्थिति थी। [29]स्पष्टतया राजा की रक्षा और आवश्यकता के समय हमला करने के लिए तैयार सिपाहियों की एक छोटी टुकड़ी नगर में दाऊद के साथ थी। [30]जोसेफस ने लिखा है कि दाऊद ने अबशालोम की सेना पर अचानक हमला कर दिया और तैयारी न होने के कारण वे जंगल में भाग गए।

[31]जंगल को ''एप्रैम नामक वन'' कहा गया है जबकि लड़ाई स्पष्टतया गिलाद में हुई थी (17:26), जो यरदन के पूर्व में था, जबकि एप्रैम यरदन के पश्चिम में था। सुझाव दिया गया है कि इस जंगल को वहां 42,000 एप्रैमियों की मृत्यु के स्मरण के लिए ''एप्रैम का वन'' कहा जाता था (न्यायियों 12:1-6)। [32]यह भी सज़्भवत है कि ''उस दिन जितने लोग तलवार से मारे गए,उनसे भी अधिक वन के कारण मर गए'' (2 शमूएल 18:8) शज़्दों का अर्थ कुएं में गिरकर (नोट 2 शमूएल 18:17), जंगली जानवरों आदि द्वारा खाये जाने से मरने वाले सिपाहियों से है। [33]बाइबल इस बारे में स्पष्ट नहीं बताती कि बीस हज़ार केवल अबशालोम के आदमी थे या कुल मिलाकर बीस हज़ार थे। मेरे अनुमान के अनुसार अबशालोम के आदमी ही है। [34]कूश नील के ऊपरी इलाके, मिसर के दक्षिण का क्षेत्र था, जिसे अब इथोपिया और सुडान के नाम से जाना जाता है। [35]यह स्पष्ट नहीं है कि दाऊद को पता था या नहीं कि योआब ने अबशालोम को मारा था (नोट 1 राजा 2:5)। दाऊद के साथ योआब की निर्भीकता से बातचीत से मुझे लगता है कि योआब को नहीं लगता था कि दाऊद को मालूम है। [36]ऐसा करने के पीछे योआब की मंशा मिली जुली लगती है। दाऊद के प्रति चिंतित होने के अलावा वह देश और अधिकार की उसकी स्थिति के प्रति ही चिंतित था। जो भी हो, उसकी बातों का दाऊद के लिए बहुत महत्व था। [37]योआब ने उसे लोगों के साथ ''प्यार से बोलने'' की चुनौती दी थी (2 शमूएल 19:7)। अक्षरश:, योआब ने कहा, लोगों के ''दिल से बात कर'' अर्थात उनके मन को छू। LB के वाज़्यांश में योआब को यह कहते दिखाया गया है, ''बाहर जाकर सेना को मुबारकबाद दे।'' [38]अपने शरीर में लगे कांटे से पीछा छुड़ाने का दाऊद का यह एक और प्रयास है। ज़्या दाऊद योआब का सामना करने के उसके गैर राजनैतिक ढंग से अप्रसन्न था? शायद। ज़्या दाऊद को मालूम था कि योआब ने अबशालोम को मारा था? शायद (यद्यपि दाऊद ने बाद में योआब के दुष्कर्मों में इसका उल्लेख नहीं किया, 1 राजा 2:5)। [39]बर्जिल्लै की कहानी बाइबल में बाद में लिखी गई है, परन्तु घटी यह दाऊद के यरदन पार जाने से पहले (2 शमूएल 19:33, 39)। मैंने इसे यहां घटनाओं को कालक्रम में रखने के प्रयास में रखा है। [40]जोसेफस के लेखों में किज़्हाम बर्जिल्लै का पुत्र था, जैसा सप्तति अनुवाद के कई संस्करणों में भी है। 1 राजा 2:7 इसका समर्थन करता है।

[41]द जेरूसलेम बाइबल के अनुसार उन्होंने उन्हें पार पहुंचाया। [42]शिमी बाइबल में उन मुट्ठी भर लोगों में से है जिन्होंने ये शज़्द कहे। स्पष्टतया उसने ये शज़्द अपने कामों के परिणामों से बचने के लिए प्रयास के लिए कहे। [43]उसने ''यूसुफ का घराना'' (2 शमूएल 19:20) शज़्द का इस्तेमाल किया। यूसुफ की संतान, एप्रैम और मनश्शै के दोनों गोत्र उज़री गोत्रों में से सबसे बड़े और सबसे प्रभावशाली थे। इसलिए ''यूसुफ का घराना'' सभी उज़री गोत्रों के लिए इस्तेमाल किया गया है। [44]दाऊद ने कभी उस पर भरोसा नहीं किया, और अपनी मृत्युशैय्या पर उसने सुलैमान को निर्देश दिए थे जो अन्तत: शिमी की मृत्यु का कारण बने (1 राजा 2)। [45]दाऊद ''परमेश्वर के दूत की तरह'' सही या गलत का निर्णय करने के कारण था। तको से आई बुद्धिमान स्त्री ने दाऊद के लिए इसी शज़्दावली का इस्तेमाल किया था (2 शमूएल 14:17)। [46]दाऊद उस मां की तरह था जिसके दो बच्चे अलग अलग कहानियां बताते हैं। वह मान सकती है कि उनमें से एक झूठ बोल रहा है, परन्तु प्रमाण न होने के कारण, वह दोनों के साथ एक जैसा व्यवहार करती है।